भूलकर अपना घर....

(आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द जैन कृत
जैन-सिद्धान्त प्रश्नोत्तरमाला के सातवें भाग से संकलित)

भूलकर अपना घर, जाने कितनों के घर
तुझको जाना पड़ा ॥टेक॥

इस जहाँ में कई घर बनाये तूने।
रिश्तेदारी सभी से निभाई तूने॥
जिनके थे तुम पिता, उन्हीं को पिता, फिर बनाना पड़ा ॥1॥

जो थी माता कभी, वो ही पत्नी बनी।
पत्नी से फिर तेरी भगिनी बनी॥
रिश्ते बनते रहे, और बिछड़ते रहे, न ठिकाना मिला ॥2॥

बन के जलचर तू सबलों से खाया गया।
होके नभचर तू जालों, फँसाया गया॥
नरक पशुओं के गम, देखकर वो सितम, हाय रोना पड़ा ॥3॥

इस जहाँ की तो वधुऐं, अनेकों वरी।
मुक्ति रानी न अब तक, मेरे मन बसी॥
जिसने इसको वरा, इस जहाँ की धरा, फिर न आना पड़ा ॥4॥